उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल

(मासिक)

रजिः *RAJH/9396* पोस्ट रजि. नं.*RJ/SR/29/12/2006-08* 7, सितम्बरः 2008 वर्ष –16 अंक 2 मूल्य 3 रु वार्षिक 35/– रु.

सेंट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी की बैठक

सेंट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी के सेंट्रल एक्ज़ीक्यूटिव कमेटी (CEC) की बैठक 10 अगस्त, बोहरा यूथ कम्यूनिटी सेंटर पर रखी गयी। मीटिंग का आगाज़ मुल्ला पीर अली ने कलामे पाक की तिलावत से किया।

इसके पश्चात् पिछली बैठक की रूदाद पर चर्चा करते हुए उसमें पास किये गये प्रस्तावों को अन्तिम स्वीकृति प्रदान करने के साथ प्रगति के बारे में सम्बद्ध सदस्यों से जानकारी ली गयी।

बोर्ड के सदस्य शब्बीर नासिर ने बताया कि गहन विचार विमर्श के पश्चात भविष्य कार्य योजना के अंतर्गत निम्न प्रस्ताव पारित किये गये :

1. सैयदना सहाब को न सिर्फ राजस्थान वक्फ बोर्ड द्वारा दाऊदी बोहरा समुदाय की सारी प्रोपटी के ''सोलट्रस्टी'' होने की मंजूरी देने के प्रस्ताव को उच्च न्यायालय में चुनौती देना बल्कि अन्य प्रान्तों में भी यदि कहीं ऐसा हुआ हे तो वहां भी माननीय न्यायालाय में वाद प्रस्तुत कर चुनौती देना।

2. पिछली उदयपुर कान्फ्रेंस के समय चार विषयों पर ग्रुप बना कर हुई चर्चा के फलस्वरूप सुझावों पर ग्रुप कन्वीनर द्वारा कमेटी गठित कर अमल करना।

3. युवाओं में आंदोलन के प्रति समझ पैदा करने व जगृति लाने हेतु स्टूडेंट वेलफेयर सोसायटी के माध्यम से स्टडी केम्प आयोजित करना।

4. आतंकवाद के खिलाफ उदयपुर में वर्कशॉप व सेमीनार करना।

5. विश्व में जहां भी सुधारवादी संस्थाए है, उसके अपने स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखते हुए CBDBC के साथ संलग्न करना।

6. IIT उदयपुर के लिये राजस्थान व केन्द्र सरकार को पत्र लिखना।

नासिर जावेद को सम्मान

नासिर जावेद किसी तआरूफ के मोहताज नहीं है। अपने आत्म विश्वास के बल पर वे स्कूल ही से अपनी पहचान बनाते गये। तबियत से खुश मिजाज़ नासिर का बुनियादी शौक पत्रकारिता है। मगर ज़रियाए–मआश की तलाश में उन्हें राजस्थान सड़क परिवहन के दफ्तर को चुनना पड़ा। जहां पर वह अपने आत्म विश्वास और काम की लगन के बल पर अपनी पहचान बनाते गये।

RTO में कार्यरत रहते हुए उन्होंने नयी पहचान बनायी है। जिसके लिये राजस्थान परिवहन मंत्रालय द्वारा उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। आपने डिपार्टमेन्ट के ग्रामीण क्षेत्र में विस्तार के लिये न सिर्फ पूरी रूप रेखा तैयार की बल्कि उसके कियान्वयन के लिये सकिय होकर काम किया, जिसके नतीज़े में आपको राज्य स्तर पर माननीय परिवहन मंत्री मदन दिलावर ने सम्मानित किया।

मस्जिद के हॉल का उद्घाटन

बोहरा यूथ व दाऊदी बोहरा ज़मात की ओर से खारोल कॉलोनी स्थित मस्जिद के हॉल का शनिवार को हाजी मुल्ला अली मोहम्मद जी ने उद्घाटन किया। जनाब हातिम अली को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर दाऊदी बोहरा जमात के अध्यक्ष, जनाब आबिद अदीब, CBBC के सचिव जनाब मन्सूरअली कमाण्डर और जमात के सचिव, जनाब अब्बास अली नाथजी ने अपने विचार व्यक्त किये।

राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार हेतु आवेदन

''अमेरीकन फेडरेशन ऑफ मुस्लिम ऑफ इण्डियन ऑरीजन'' की जानिब से सेकेण्डरी व सीनियर सेकेण्डरी के बच्चों को जिसनें 75% से अधिक नम्बर हासिल किये है उसे राष्ट्रीय के स्तर पर सम्मानित किया जायगा। यह सम्मान राज्य स्तर के आधार पर मेरिट के हिसाब से दिये जायेगें। योग्य स्टुडेंट अपने नाम तारीख 20 सितम्बर तक स्टुडेंट वेलफेयर के दफ्तर में जमा करवा सकते है। नाम जमा करवाने के लिये फार्म सोसायटी के दफ्तर से शाम 5.00 से 6.00 बजे के बीच हासिल कर सकते है।

हमारा सवाल : सामाजिक रीतियों में बढ़ते आर्थिक अपव्यय पर रोक के लिए आपके सुझाव ?

How can we put a stop to the rising extravagance in our social customs. Please give your suggestions ?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

इदारिया

ज़िंदगी इन्क़लाब है, ऐ दोस्त!

इन्सानी समाज एक ऐसा चशमा (झरना) है, जो हज़ारों सालों से तेज़ी से बह रहा हैं, मगर थमने का नाम नहीं लेता। यह कभी साफ़ जगह से निकलता है तो निर्मल और शफ़्फ़ाफ़ होता है और सतयुग की निशानदही करता है। लेकिन जब कूड़ा–करकट को अपने दामन में लिये गुज़रता है तो मैला–कुचैला हो जाता है। तो पूरे समाज पर नागवार असर डालता है और कलजुग को चिन्हित करता है। और जब दीवानावार चट्टानों से टकरा कर उछलता हुआ ढलान में गिरता है तो कई कमज़ोर पौधों को ही नहीं, बल्कि मज़बूत दरख़्तों को भी उखाड़ ले जाता है। जैसे कोई दौलतमन्द ''सरबराह'' अपने ''अना'' (स्वाभिमान) के नशे में चूर अपने ही लोगों पर अपनी धाक जमाने के लिये अपने विभिन्न साधनों का इस्तेमाल कर ताक़त का मज़ाहिरा (प्रदर्शन) करता है। लेकिन जब हवायें खिलाफ चलने लगती हैं, तो इसकी रफ़्तार में धीमापन भी आता है।

इन्सानी समाज की इसी तेज़ी मन्दी में कई तरह के हालात बनते हैं और फिर उनमें बदलाव भी ज़रूरी हो जाता है। स्वार्थ, लौलुपता, साम्राज्यवाद और आक़ाई ज़हनियत का बोलबाला हो जाता है। नतीजे में समाजी नाइन्साफ़ी और ग़ैर बराबरी पनप कर मोहब्बत को नफ़रत में, दोस्ती को दुश्मनी में, वफ़ादारी को ग़द्दारी में, आज़ादी को ग़ुलामी में, और धर्म को अधर्म में बदलने लगती है। समाजी बुराइयां इन्सानी क़द्रों (मानवीय मूल्य) को मलियामेट करने लगती है। चापलूसी शख़्सियतें तानाशाहों को जन्म देने लगती है। दीन–धर्म की सूरतें बदलने की तैयारियां होने लगती हैं। ख़ानदानों में ज़िन्दगियां अलग–अलग धड़ों में बंटने लगती है। गुलामी का सिलसिला बढ़ता जाता है। बराअत शुरू होती है।

जब पीड़ित और दुःखी समाज के हर वर्ग और सम्प्रदाय में बदलाव की आवाज़े उठने लगती है तब तब्दीली लाज़मी हो जाती है। इस आवाज़ को हमदर्दी ही नहीं, बल्कि इन्साफ़ पसन्द और मज़हब के सच्चे मानने वालों का भरपूर सहकार भी मिलता है।

इन्हीं हालात का नाम इन्क़लाब है सामाजिक परिवर्तन है और यह तब्दीली क़ुदरत का अहम दस्तूर है। क्योंकि यह बदलाव मज़हब के ख़िलाफ नहीं। मज़हब तो दायमी (सनातन) है। हमारी मुक़द्दस इलाही किताब ''क़ुरआन मजीद'' में अल्लाह ने फरमाया है कि – ''इन्नल्लाहा ला युग़य्यिरों मा बिक़ौमिन हत्ता युग़य्यिरू मा बिअनफ़ुसोहिम''

तर्जुमा – *''बेशक अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद उसे न बदलें, जो उनके दिलों में हैं।''*

और इसी आशय को डा. इक़बाल ने अपने शेर में इस तरह कहा है –

''ख़ुदा ने आज तक इस क़ौम की हालत नहीं बदली,
न हो जिसको ख़्याल ख़ुद अपनी हालत को बदलने का''

बोहरा यूथ की इस्लाही तहरीक भी मज़हब और शरीयत के दायरे में इन्सानी क़द्रों को बढ़ावा देने, समाजी नाइन्साफी के ख़िलाफ ईमान और ज़मीर पर साबित क़दम रहने, अपने हमराहियों की तकलीफ़ों में साथ देने, बराअत के ख़िलाफ सब्रो हिम्मत के साथ सच्चाई की राह में बड़ी से बड़ी क़ुरबानी देने का सबक़ देती है। यह साफ शफ़्फ़ाफ चशमा रवाँ–दवाँ हो कर इन्सानियत के मैदानों में मक़बूलियत हासिल कर रहा है।

इसलिये इस तहरीक में शरीक होकर इसका सहयोगी बनना मज़हब और इन्सानियत की सच्ची ख़िदमत होगी।

– आबिद अदीब

बोहरा यूथ की मुजाहिद ख़्वातीन

फातिमा बाई याहया अली एडवोकेट

मोहतरमा फातिमा बाई आर. जी. बोहरा यूथ गर्ल्स विंग की फाउण्डर मेम्बर में से एक है। आप एक बवकार, चितंनशील और झुझारू खातून है। बोहरा तहरीक शुरू होने से पहले अपना वक्त किताबें पढ़ने में सर्फ करती थी। आपकी जुबानी ''एक वक्त ऐसा था कि बुरहानीया लाइब्रेरी में कोई किताब ऐसी बाकी नहीं थी जिसको मैंने पढ़ा नहीं हो।''

फातिमा बाई के मुतालिए के इस शौक ने उसे प्रेरित किया कि क्यूं न वह भी बच्चों के साथ सेकेण्डरी का इम्तिहान दें। आपने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से अदीब का इम्तेहान दिया जिसमें कामयाब रही। यह फातिमा बाई की ज़िंदगी का बहुत सुखद तजुर्बा है।

बोहरा कौम में जो हलचल तहरीक के पहले से चल रही थी उसकी आपके शौहर से बराबर जानकारी मिलती रहती थी पर पूरी तरह शरीक नहीं थी। वकील साहब के विचारों का आप पर गहरा असर था। लिहाज़ा तहरीक शुरू होते ही उसमें कूद पड़ी। आपका ध्यान तहरीक के हर मोर्चे पर लड़ने के अलावा भी बहनों की फलाह और बेबूदी के लिये हर मुमकिन तआवुन देने का रहा। लिहाज़ा बोहरा यूथ गर्ल्स विंग की लाइब्रेरी ''दानिश कदेह'' को लम्बे अरसे तक पूरी ज़िम्मेदारी से चलाती रही।

इसके अलावा 70 के दशक में पूरे समाज की माली हालत बहुत कमजोर थी और कौम के खैर रव्वाहों की ओर से इसे ऊपर उठाने की हर मुमकिन कोशिश चल रही थी जिसका बड़ा उदहारण दि उदयपुर अरबन कॉ–आपरेटिव बैंक है।

''मुझे याद है जब हम बैंक के शेयर घर घर बेचने जाते थे तो लोगों के पास 50 रूपये तक नहीं हुआ करते थे''।

तब बोहरा यूथ गर्ल्स विंग की जानिब से भी सिलाई क्लासें शुरू की गयी। उस वक्त गर्ल्स विंग की सेक्रेट्री हमीदा बाई देहलीवाला थी उनकी कोशिशों से उदयपुर म्यूनिसीपल काउंसिल के स्टाफ की ड्रेसें बनने आया करती थी जिससे बहनों को बड़ा सपोर्ट मिलता था।

आपका कहना है कि आज ''हम बूढ़े हो चुके है नयी बहनें बहुत पढ़ी लिखी है और दुनिया में जो कुछ घट रहा है उससे पूरी तरह वाकिफ है इसलिये आगे आकर काम करें और हमारी तहरीक को मज़बूत बनाये''।

तहरीक से आपका जुड़ाव कितना है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आपकी फैमेली का हर फर्द तहरीक में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता है। आपसे हमें हमेशा हौसला मिलता रहे।

अल्लाह आपकी उम्र दराज करें। आमीन!

मैमूना बाई मदारवाला

मैमूना बाई, मदारवाला फैमेली से तआलुक रखती है। आप 22 साल की उम्र में शादी कर मुम्बई जा बसी जहां वह 45 साल तक मुकीम रही।

तहरीक के शुरू होने के साथ जब कोठार की सख्तीयाँ बढ़नी शुरू हुई तब आपका कहना है कि हमारा अकीदा भी ज़्यादा मज़बूत होता चला गया। शुरू में आपके शोहर को क्लब से यह कह कर निकाल दिया गया कि अगर तुम मीसाक नहीं लोगे तो क्लब में तुम्हारे लिये जगह नहीं है। आपके शोहर साबित कदम रहे और क्लब जाना बंद कर दिया।

कोठार की जानिब होने वाली सख्तियों का अदांजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आपके जवान बेटे और बहु की समुद्री तूफ़ान में मौत होने जैसे खरतनाक हादसे पर हर किसी का दिल दहल जाता है पर कोठारियों ने इस हादसे का भी फायदा उठाना चाहा और उसे दफ़्न करने की 8 घटें तक रज़ा नहीं दी। कब्रिस्तान में आपके लिये नियत की गयी जगह पर तीन फर्जी कब्र बना दी जिससे बहुत बड़ा बवाल खड़ा हुआ। और आपके बेटे को पुलिस की मध्यस्थता में दफ़्न करना पड़ा।

ज़ाहिर है किसी मां के जवान बेटे और बहु की मौत पर कैसे सब्र आ सकता है। लिहाज़ा मैमूना बाई रोज़ कब्रिस्तान जाया करती थी जहां कब्र हर वक्त टूटी हुई मिलती था। थक हार कर जब आप आमिल के पास गयी तो उसका रवैया देख कर हैरान रह गयी। उसने कहां ''अगर तुम मीसाक लेकर माफी नहीं मांगोगी तो यह सब तो होगा''।

कोठार की इस हरकत से जाहिर है हर किसी आम आदमी का दिल नफरत से भर जायेगा फिर मैमूना बाई को कैसे सब्र आ सकता था। जहां एक तरफ कोठार की सख्तियां बढ़ती गयी वहां बोहरा तहरीक में एक के बाद एक फलाह बेबूदी के काम होते चले गये जिससे आपने अपने आखिरी दम तक तहरीक का दामन थामे रखने का तहिय्या किया।

आप आपके शोहर के इतिंकाल के बाद उदयपुर आकर बस गयी जहां कोई भी ऐसा आयोजन नहीं है जिसमें आप गैर हाजिर रही हो। आपके इस अमल का असर अपके बेटे शोकत मदारवाला बेटी, डॉ जुलेखा और दामाद हिब्तुल्लाह अत्तरवाला में देखा जा सकता है।

अल्लाह आपकी उम्र दराज करें। अमीन!

"कभी किसी को न मौका दिया शिकायत का"

हाजी मरहूम मोहम्मद हुसैन मूमिनजी वाला

11 अगस्त सन् 2008 ई. का दिन बोहरा यूथ की तहरीक के लिये ग़मनाक साबित हुआ। इस दिन तहरीक का एक ऐसा बुजुर्ग मुजाहिद हमेशा के लिए ख़ामोश हो गया, जिसकी ख़ामोशी ही तहरीक के लिये उनकी कुरबानी और जांफिशानी को ख़ामोशी के साथ बयान कर देती थी।

शुरू से ही बोहरा यूथ की इस्लाही तहरीक के हामी मरहूम मोहम्मद हुसैन मूमिनजी वाला उर्फ कालू भाई 95 साल की उम्र में इस तरह फौत हो गये कि वफ़ात की रात को भी अपने बच्चों से यूथ की चलवल की जानकारी और मीटिगं की रूदाद सुन कर सोये और फिर तीन बजे के क़रीब आख़िरी सांस ले लीं।

मरहूम ख़ामोश तबीयत के खुश मिज़ाज और मिलनसार आदमी थे। बोहरा यूथ के हर काम के लिये हर वक़्त, हर लम्हा खुद को तैयार रखते थे। वे अपने काम से काम रखते। कभी उनको ऊँची आवाज़ में बोलते नहीं सुना, न नाराज़ होते देखा। उनको कभी किसी से शिकायत नहीं रही।

मरहूम पंजगाना नमाज़ बिला नाग़ा मस्जिद में जाकर अदा करते थे। रसूलपुरा की मस्जिद में तो रमज़ान में बरसों तक निस्फिल्लैल की नमाज़ की तवल्ली की। अज़ादारी की मजलिसों में बराबर शिरकत करते और मर्सिया–ख़्वानी कर सवाबे दारैन हासिल करते।

बोहरा यूथ की हर जनरल मीटिंग और कान्फ्रेंसों में बराबर शिरकत कर अपना क़ीमती तआवुन दिया है।

उनके पुरमलाल इन्तिक़ाल पर इदारा उन्हें ख़िराजे–अक़ीदत पेश करता है और पाक परवरदिगार से मग़फिरात की दुआ करता है। आमीन!

कमरूद्दीन भाई का इन्तिकाल

भाई कमरूद्दीन गिलूण्ड वाला तारीख 24, अगस्त को 85 साल की उम्र में सुबह दारे फानी से रूखसत हो गये।

तहरीक के शुरू के दिनों में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। जरिया "ए" मआश की खातिर आप एक छोटे से गांव में दुकानदारी करते थे जहां आप हर दिल अज़ीज़ थे।

मरहूम उसूल परस्त और खुद्दार इसांन थे। जिसकी मिसाल यह है कि आपकी पूरी फेमेली माली परेशानियों की खातिर कोठार को मीसाक दे चुकी थी पर आप तन्हें तन्हा सारी मुसीबत सहते हुए आखिर तक तहरीक के हामी रहे। आप जहां भी रहे हर दिल अज़ीज़ रहे। बोहरा यूथ, दाउदी बोहरा जमाअत और बोहरा जर्नल आपको ख़िराजे़ अकीदत पेश करते है।

बोहरा यूथ वार्षिक सभा

बोहरा यूथ (संस्थान) की ओर से आम वार्षिक सभा का आयोजन विद्या भवन केम्पस के बी.एड. कॉलेज में किया गया।

कुराने पाक की तिलावत के साथ केनेडा से आए मुस्तनसिर राज की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। शबेबरात की बधाई के साथ जमात के अध्यक्ष, जनाब आबिद अदीब, बोहरा यूथ के अध्यक्ष जनाब हुसैन उदयपुरी, सचिव जनाब लियाकत अमर एवं जनाब यूसुफ अली के साथ ने सामाजिक रिश्तों और आत्मीयता की जड़ों को मज़बूत करने एवं सुधारवादी आंदोलन को नई पीढ़ी तक पहुँचानें में अपने विचार व्यक्त किये।

जनाब मुल्ला पीर खान साहब ने रमज़ानुल मुबारक के महीने की फज़ीलत बताते हुए नमाज़, रोज़े और कुरान के साथ पूरे महीने इबादत करने पर ज़ोर दिया।

आयोजन की पूरी व्यवस्था स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसायटी के सदस्यों द्वारा की गई थी। सोसायटी के फरहाद हुसैन मण्डीवाला ने इसका संचालन किया। तौसीफ मन्डीवाला, तथा तौसीफ टीडीवाला ने इस आयोजन को सफल बनाने में सभी के सहयोग की सराहना करते हुए आभार प्रकट कर धन्यवाद दिया।

पूर्व निर्धारित एजेंडा पर रोशनी डालते हुए बोहरा यूथ के सेक्रेट्री लियाकत अमर ने बताया कि लम्बे अरसे से विचाराधीन विस्तार कार्यक्रम के अतंर्गत जनाब शेख अहमद अली राज़ के नाम से इस्माइली अकायद और तहज़ीब की विरासत को उसके मूलरूप में जिंदा रखने की गरज से, लाइब्रेरी कम रिसर्च सेन्टर व जनाब शेख याकूब अली के नाम से सीनियर सिटीजन होम कायम करने की घोषणा की, जिस पर जनाब मुस्तनसिर राज़ ने हर मुमकिन मदद करने का आश्वासन दिया।

पर्यावरण मैत्री

27 जुलाई को सम्पन्न बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी के "पर्यावरण मैत्री" कार्यक्रम के अंतर्गत बस्तीराम जी की बाड़ी स्थित सार्वजनिक पार्क में वृक्षा रोपण किया गया।

आयोजन में मुख्य अतिथि शैलजा देवल (IFS), विशिष्ट अतिथि वन्यजीव अधिकारी सतीश शर्मा तथा नगर जन प्रतिनिधि अशोक परिहार, अय्यूब खान उपस्थित रहे। अध्यक्षता जनाब आबिद अदीब ने की।

प्रोग्राम के महत्व पर रोशनी डालते हुए सोसायटी के अध्यक्ष, अनीस मियाजी ने बताया कि चिकित्सा सेवा के साथ–साथ सोसायटी प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के विस्तार हेतु हर सम्भव कार्य करेगी।

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में यौमे आज़ादी मनाया गया

Letter to the Editor :

आप अपने तअस्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : bohra.journal@hotmail.com

मौजूदा हालात और ज़कात – Part I

यह लेख जब आप पढ़ने वालों के हाथ में होगा, माहे मुअज़्ज़म के शुरूआती अय्याम होंगे!

माहे रमजान इबादत का महिना है हर नेक काम को इबादत कहा गया है। दीनी फराइज़ में से एक फर्ज़ ज़कात का अदा करना भी है जो आम तौर पर माहे रमज़ान ही में और खुसूसन शबेक़द्र के मौक़े पर अहले ईमान अदा करते है।

ज़कात इस्लाम में एक इन्स्टीट्यूशन की हैसियत रखता है और इस पर अनेकों किताबें और तवील मज़ामीन और लेकचर सीरीज के रूप में, लिट्रेचर है। यहाँ पर एक मुख्तसर नोट तैयार करके पेश किया जा रहा है। परवर दिगारे दो आलम से दुआ है कि इस नोट को अपने माहे बरक़त के सदक़े में अपने बन्दों तक पहुँचाए और जक़ात की अज़मत से उनके दिलों को भर दे आमीन!

हमारे अकायद के मुताबिक इस्लाम के सात सुतून (स्तंभ) है। जक़ात उनमें से एक है। कुरान शरीफ में ज़कात का ज़िक्र लगभग 100 मरतबा आया है और बेश्तर में इसको नमाज़ के साथ जोड़ा गया है। नमाज़ को मूमिन की पहचान तसव्वुर किया गया है। जब ज़कात बार–बार इसके साथ शामिल है तो ज़कात की पोजिशन एक ''कार्नर स्टोन'' की हो गई। जिस तरीके से कार्नर स्टोन दो दीवारों का सहारा होता है ज़कात भी नमाज़ के साथ जुड़कर गोया दो दीवारों का सहारा है।

जक़ात के माअना ''पाकी'' और ''सफाई'' के है। अपने माल में से एक हिस्सा हाजत मन्दों और मिस्कीनों के लिए निकालने को ज़कात इसलिए कहा गया है कि ऐसा करने से आदमी का माल और उसके खुद का नफस पाक हो जाता है। वह इस तरह के एक दौलत मन्द को अल्लाह ने अपने दुसरे बन्दों के मुकाबले ज्यादा देकर उस पर एहसान किया है। और हुक्म दिया है कि इसका एक हिस्सा वह उसकी (अल्लाह) राह में खर्च करे। अगर बन्दा ऐसा करता है तो गोया उसने अल्लाह के एहसान का शुक्र अदा किया और हुक्में अल्लाह को मानकर एहसान मन्दी का इज़हार किया। वरना उसने ना–शुक्री की। शुक्र से नफ़्स पाक होती है बन्दा अल्लाह की पार्टी में शामिल हो जाता है।

ज़कात का कन्सेप्ट

अल्लाह तआला ज़मीनों आसमान का मालिक है। बादशाहों का बादशाह है और बे नियाज़ है। मालो असबाब के बारे में कुरान मज़ीद के नीचे लिखे गए इरशादात फण्डामेन्टल्स की हैसियत रखते हैं:–

1. मालदार अल्लाह के अता करदा अमवाल के ट्रस्टी है। अल्लाह चाहता है कि इस ट्रस्ट फण्ड का एक हिस्सा वह अल्लाह की राह में खर्च करें। जो ट्रस्टी ऐसा करता है तो अल्लाह कहता है उनके लिए <u>बड़ा सवाब</u> है। (देखिये सुरः हदीद आयत 7 (57:7)

2. अल्लाह चाहता है कि दौलत चन्द दौलतमन्दों के हाथों ही में मकबूज न रहे। याने दौलत का सरकुलेशन हो इसकी <u>होर्डिंग (hoarding) न हो</u> । (देखिये सुरः हश्र आयत 7(59:7)

3. और चाहता है कि ट्रस्टीज़ उनके अता करदा ट्रस्ट फण्ड में माँगने वालों और न माँगने वालों (दोनों) का हिस्सा अदा करे।

(देखिये सुरः ज़ारियात आयत 19 (51:19)

इस तरह अल्लाह ने ट्रस्ट डीड के मन्दर्जाबालातीन अहम अहकामात वाजिब कर दिये। और ट्रस्टीज़ याने मालदारों को एक इम्तहान में डाल दिया।

इब्तदाए इस्लाम में ज़कात का मुक़ाम

रिसालत मआब (स.अ.व.स.) ज़कात पर और उसकी वसूली पर अपनी हयातों में खास तवज्जोह देते थे। इस्लामी माअशीयत में जक़ात की वसूली ही से तमाम मुसलमानों की बुनियादी ज़रूरियात को मुहैय्या कराना और कम नसीब लोगों को एक डिग्नीफाइड ज़िन्दगी बसर करने का अवसर प्रदान करने और सोसायटी में अमनों चैन का माहौल तसव्वुर करते थे। जहाँ जहाँ मुसलमानों की आबादी थी, किया था।

यही वजह है कि वहाँ अस्हाब को भेज कर ज़कात वसूली करते थे और फिर बैतुल माल से हकदारों का हक अदा करते थे। याने जक़ात वसूली को एन्फोर्स (enforceआप (स.अ.व.स.) की वफात के बाद जब अरब के कुछ क़बीलों ने ज़कात देने से इन्कार किया तो हज़रत अबु बक्र ने इंकार करने वालों से ऐसी ही जंग की जैसे जाहिलियत में मुशरिकीन से की जाती है, हालाँकि इंकार करने वाले नमाज़ पढ़ते थे और खुदा और रसूल का इक़रार करते थे। इससे साफ वाजेह है कि बग़ैर ज़कात अदा किये रोज़े और नमाज़ और ईमान की शहादत बेकार है। दूसरी तरह यह खुलासा हो जाता है कि जहाँ ज़कात देना एक शख़्स का फर्ज़ है वहीं इस्लामी हुकूमतें इसकी वसूली में फोर्स भी इस्तेमाल कर सकती है। कुछ यूरोपियन मुबस्सिर तो यहाँ तक कहते है कि अगर सरकार दो आलम (स.अ.व.स) ने जक़ात के इन्स्टीट्यूशन पर इतना ज़ोर न दिया होता तो मुशरिकीन बग़ैर चूँ ओ चरा आपके वहदानियत (तौहीद) के पैग़ाम को कबूल कर लेते।

ज़क़ात शुरू ही से दीने इस्लाम का एक सुतून रहा है।

हमारा अकीदा है कि दीने इस्लाम हज़रत आदम (अ.स.) ही के दौर से राइज है। केवल शरीअतें बदलती रही है। तो कुरान मजीद का जायजा लिया जाय तो हमें मालूम होगा कि नमाज़ और ज़कात शुरू ही से दीने इस्लाम के दो सुतून रहे है। इन दोनों के हुक्म से यह दीन कभी खाली नहीं रहा। मुलाहिज़ा हो कि

1. सुरः अन्बिया आयत 73 में सैयदना इब्राहीम (अ.स.) और उनकी नस्ल से अन्बियाः को नमाज़ और ज़कात की तालीम दी गई।

2. सुरः मरियम आयत 55 में इस्माईल नबी (अ.स.) को इरशाद हुवा कि वह लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म दे।

3. सुरः अल आराफ आयत 156 से हमें मालूम होता है कि मूसा (अ.स.) ने जब अल्लाह से दुआ की कि, हमें दीन और दुनिया की भलाई अता कर तो अल्लाह ने ज़कात को शामिल किया।

4. सुरः अलमाइदा आयत 12 को देखने से पता चलता है कि जब बनी इसराईल (यहुदी) अपनी तंग दिली से बाज़ नहीं आए तो अल्लाह ने वार्निंग दी कि वह (याने अल्लाह तआला) उनके साथ है बशर्त यह कि वह (यानि बनी इसराईल) नमाज़ पढ़ते रहे और जक़ात देते रहे।

5. सुरः मरियम की आयत 31 में हज़रत ईसा (अ.स.) को अल्लाह नमाज़ और उसके साथ ज़कात का हुक्म देता है।

इसके अलावा कुरान मजीद खोलते ही सुरः बकरः की आयत 2 में हम देखते हैं :

तर्जुमा –'' 'याने' यह कुरान अल्लाह की किताब है, इसमें कोई शक नहीं। यह परहेज़गारो को दुनिया में ज़िन्दगी का सीधा रास्ता बताता है ओर परहेज़गार वह लोग है जो गैब पर ईमान लाते है और नमाज़ पढ़ते है और जो रिज्क़ हमने उनको दिया है, उसमें से खुदा की राह में खर्च करते है। (याने ज़कात देते है) '' फिर फरमाया ।

एसे ही लोग अपने परवर दिगार की तरफ से हिदायत याफता है औ फलाह एसे ही लोगों के लिए है।''

मतलब यह हुआ कि जिनमें ईमान नहीं और जो नमाज़ और ज़कात के पाबन्द नहीं वे न हिदायत पर है और न उन्हें फलह नसीब हैं। थोड़ा और आगे चलने पर इसी सुरः (बकरः) की 43वी आयत में इरशाद है कि :

तर्जुमा ''नमाज़ की पाबन्दी करो और ज़कात दो और रूकुअ करने वालों के साथ रूकुअ करो (याने नमाज़ व जकात अदा करो)''

जैसा कि ऊपर बताया गया है ज़कात का ज़िक्र कुरान मजीद में बार–बार आया है। यहाँ सिर्फ कुछ का ही हवाला है। तमाम आयात करीमा की तिलावत ज़कात की अहमियत और इस्लामी इकॉनोमी में इसकी इम्पोर्टेन्स से एक मूमिन को मुकम्मिल तौर पर मुतमईन कर लेगी। इन्शा अल्लाह।

दौरे जदीद और जक़ात की अदायगी

कुछ साहिबाने हैसियत ज़कात को इस्लामी हुकूमत में एक ''टेक्स'' के रूप में लेते है। अब बेश्तर मुमालिक में इस्लामी हुकूमत नहीं है। तो जो हुकूमते है, उनको इन्कम टेक्स, वेल्थ टेक्स, गिफ्ट टेक्स वगैरा अदा करने के बाद समझते है कि वह ज़कात देने के फरीज़े से आज़ाद है। शायद इसी नज़रिये की वजह से हम देखते है कि हमारे भाई और बहनों से शबे कद्र के दिन ज़कात देने के लिए कहना पड़ता है, ज़ोर लगा कर और जब अदा करते है तो अक्सर बारगेन के साथ।

यह सुरते हाल ज़कात के फलसफा की बेख़बरी के कारण हो सकती है। इसीलिए शुरू में एक मुख़्तसर तहरीर में इस फलसका को बताया गया है।

मालूम होना चाहिए कि टेक्स पेयर अपना टेक्स सरकार को सरकारी काम काज चलाने के लिए देता है, जिसके एवज में सरकार अपने फराईज़ अंजाम देती हैं। जक़ात से न सिर्फ ज़रूरत मन्दों की जरूरियत का अज़ाला होता है। बल्कि ज़कात देने वाले को सवाब भी मिलता है, जिससे उसकी रूहानी तरक्की होती है। एक दीनी फरीज़ा भी अदा होता है।

- To be continued next month

<u>Sponsor's tariff rate :</u>

COLOR

Front Page @ 50 1centi column

Back Page @ 40 1centi column

Middle Pages @ 30 1centi column

BLACK & WHITE

Front Page @ 35 1centi column

Back Page @ 25 1centi column

Middle Pages @ 10 1centi column

रमज़ानुल मुबारक की फज़ीलत

कुरआने हकीम रमज़ानुल मुबारक महीने में नाज़िल हुआ। माहे रमज़ान में ही आसमानी किताबें इंजील, तौरेत, ज़बुर और कुरआन नाज़िल हुई। कुरआन वही के ज़रिए हमारे नबी मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.) पर नाज़िल हुआ। कुरआन में तुम से पहले वालों की और तुम्हारें बाद वालों की खबरें है और तुम्हारे दरम्यान जो है, उसके लिए अहकाम है। इसलिए कुरआन सीखो, यकीनन यह दिलों की दवा है।

कुरआन के अलावा कहीं से हरगिज़ शफाअत तलब न करना क्यूंकि बिलाशुबा यह तमाम अमराज़ की दवा है। यह एक मुकम्मल ज़ाबता हयात है। यह लातादाद ऊलुम का सरचश्मा है। कुरआन नाज़िल होने में 23 बरस लगे। तेरह (13) बरस तक मक्का मोज़मा में और दस (10) बरस तक मदीना मुनव्वरा में नाज़िल होता रहा। यह रहती दुनिया तक मशअले राह रहेगा।

माहे रमज़ान में ही रसुल्लाह ने सन् 8 हिज़री में शहर मक्का को फतह किया।

माहे रमज़ान में ही मौला अली इब्ने अबी तालिब को 19 रमज़ान सन् 40 हिज़री को शहीद किया गया और इन्सानियत को दरस देता रहेगा। इसमें नमाज़, रोज़े, ज़कात, हज एवं ज़िहाद के अरकान और बयान शामिल है।

अल्लाहुम्मा इन्ना हाज़ा शेरे रमाजनुल्लजी उंजिला फीहिल कुरआन, हुदनल्लिनासे व बइयनातिं मिनल हुदा वलफुरकान
यह वह मुबारक माह है जिसमें हमने कुरान को नाज़िल किया. . . . .

माहे रमज़ान कलामें पाक के मुताबिक सारे महीनों में अफज़ल माना गया हे। यह माह परवरदिगार के नज़दीक अपने गुनाहों के मग़फिरत का महीना हे। इस माह में हर मुसलमान नेक अमल करने की कोशिश करता हे। बोहरा यूथ दुआगा है कि यह महीना पूरी खूबियों के साथ तमाम हो और सभी मूमिनीन भाईयों–बहनों, बच्चों और बुजुर्गों की ज़िन्दगी को खुशहाली से भर दे। आमीन !

हालाते हाज़रा को देखते हुए बोहरा यूथ आप हज़रात को याद दिलाती है कि बोहरा यूथ जिन्दा–ओ–जावेद आप हज़रात की कुरबानियों की वज़ह से है और जो बुलन्दी आप देखते है वह आप लोगों के तआवुन ही का नतीजा है।

आप याद करें कि आप लोगों ही ने कोठार की हर साज़िश को नाकाम किया है, कलेक्ट्रेट से लगा कर विधान सभा तक अपना लोहा मनवाने का सेहरा भी आप लोगों ही के सिर पर बंधता हे। पूरी तहरीक को नेसत नाबूद करने की कोशिश को आपने नाकाम कर दिखाया, अपनी नैय्या को खुद पार लगाने की ताकत आप में हे, इसी मुबारक माह में आपने बैंक के चुनाव का मोर्चा जीता है, पिछले साल मोइयदपुरा मस्जिद के नमाज़ियों के साथ बद सुलूकी करने, उन्हें खदेड़ने की न काम कोशिश करने के नतायज आपकी मज़बूत कूवते इरादी की तरफ इशारा करते है।

आप ही के दिये हुए हौंसले और माली इमदाद से करीब 350 फौज़दारी मुकदमें, 10–12 दीवानी मुकदमें (जिसमें एक सुप्रीम कोर्ट में जेरे समाअत है) की जिम्मेदारी बोहरा यूथ उठा सका है, बोहरा यूथ स्कूल खांजीपीर, स्पोर्टस् अकादमी व कम्यूनिटी हॉल, खारोल कॉलोनी, खांजीपीर व वजीहपुरा मस्जिद की तामीर व फिरसे आरास्ता करने का काम आपके ताआवुन के बगैर मुमकिन नहीं था। यह सारी कारगुजारीया बताती हें कि बोहरा यूथ को आपने जब भी किसी मुसीबत में देखा आपसे जो बन पड़ा किया।

आज बोहरा यूथ जिन दुशवरियों के दौर से गुज़र रही है वह आपसे किसी तरह से छुपा हुआ नहीं है। इसलिये रमज़ान के इस बबरकत अय्याम में बराये करम बोहरा यूथ व जमाअत के तमाम इदारों को फराख़ दिली से माली इमदाद फराहम कर बोहरा यूथ के गुलशन को ताज़गी ब़ख्शे। शुक्रिया!

माहे रमज़ान मुबारक! शबे कद्र मुबारक! ईद मुबारक!

लियाकत अमर
(सेक्रेट्री, बोहरा यूथ)

नमाज़ का बयान

अल्लाह के नज़दीक नमाज़ का बहुत बड़ा रूतबा है, कोई इबादत अल्लाह के नज़दीक नमाज़ से ज़्यादा प्यारी नहीं है। अल्लाह ने अपने बन्दों पर पाँच वक्त की नमाज़े फर्ज़ कर दी है। (फज्र, ज़ोहर, असर, मगरिब और इशा) इनके पढ़ने का बड़ा सवाब है। इनके छोड़ने से बड़ा गुनाह होता है। रसूले करीम (स.अ.) ने फरमाया कि नमाज़ दीन का सुतून है।

कयामत के दिन सब से पहले नमाज़ की पूछ होगी। मॉ बाप को भी हुक्म है कि बच्चों से ताकीद से नमाज़ पड़वाऍ। नमाज़ का छोड़ना कभी किसी वक्त दुरूस्त नहीं है। नमाज़ गलतियों के लिए साबुन का काम करती है। जिससे सारे गुनाह धुल जाते है।

रोज़े का बयान

अल्लाह के नज़दीक रोज़दार का बड़ा रूतबा है। कयामत के दिन रोज़े का बेहद सवाब मिलेगा। रोजा खानापीना छोड़ देने का नाम नहीं है। बल्कि रोज़ा यानी हर उस चीज़ को छोड़ देना है, जो अल्लाह को नापसन्द हो। हर चीज़ की एक ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़े है।

ज़कात का बयान

जिस के पास माल हो और उसकी ज़कात न निकालता हो वो अल्लाह के नज़दीक बड़ा गुनहगार है। कयामत के दिन उस पर बड़ा अज़ाब होगा। इस्लाम का निज़ाम ज़कात से है। नमाज़ ही की तरह ज़कात भी फर्ज़ और इबादत है। ज़कात इसलिए फर्ज़ की है, ताकि इस से गरीबों का भला हो और समाज से गरीबी, मुफ़लिसी का खातमा हो जाए।

हज़ का बयान

रसूले खुदा ने फरमाया कि हज़ गुनाहों को धो देता है। उमरा और हज़ करने पर बड़ा सवाब है। यह गुनाहों को इस तरह दूर करते है, जैसे भट्टी लोहे के मेल को दूर कर देती है। (हज़ का .... करना इस्लाम का तरीका नही है।) जिसके पास खाने पीने और सवारी का इतना इन्तजाम हो जिससे वो बैतुल्लाह शरीफ तक जा सके और फिर वह हज़ न करें तो वो मुसलमान नहीं है। बैतुल्लाह की ज़ियारत जहन्नुम के अज़ाब से बचा लेती है।

जिहाद का बयान

जिहाद इस्लाम के सुतूनों में से एक है। अपनी दौलत, जान और जुबान के ज़रिए खुदा की राह में ज़िहाद करने का दरजा बहुत बुलन्द है। अपनी खुवाहिशात से इस तरह ज़िहाद करों जिस तरह तुम अपने दुश्मनों से लड़ते हो।

कुरान मजीद के बारे में कुछ मालूमाती पाइन्ट

बिस्मिल्लाह इर्रहमान निर्राहीम

1. कुरान शरीफ में निम्नलिखित आयतें अपने आप में पूरी आयत हैः– अलिफ लाम मीम (5 बार आयत) अर्रहमान, वत्तूर, तसीन मीम (3 बार) यासीन हाममीम (7 बार), आयेन सीन क़ाफ आदि। यह हुरूफे मुक़त्तेआत केहलाते हैं।
2. कुरान मजीद में अलिफ से ये तक कुल शब्द 313834 कहीं पर 342670/340740 हैं। कुल रूकूअ़ 540 हैं।
3.(सूरत) ल्मुज़ाम्मिल में दूसरी रूकूअ़ पूरी एक आयत है।
4. सूरत बनी इस्राईल, केफ, आहज़ाब, जिन फुरक़ान, दहर यह ऐसी सूरतें हैं, जिनकी आयात ''अलिफ'' पर ख़त्म होती है। जैसे अलीमा, हकीमा, अज़ीमा आदि।
5. पंदरवाँ (15वाँ) सिपारा में समीऊल्बसीर को छोड़ कर पूरे सिपारे में आयत ''अलिफ'' पर ख़तम होती है। जैसे वकीला, शकूरा, माअ़फूला आदि और सूरत मोहम्मद में तमाम आयातें ''मीम'' पर ख़त्म होती है। जैसे अक़्वामोकूम, अम्सालहुम। सूरतूल्क़मर की हर आयत ''रे'' पर ख़तम होती है, जैसे नसर, जुबूर, मुस्ततर, आदि।

- Compiled by Fakhruddin R.V.

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy *Muslim Women's Newsletter.*

Muslim Women 'Can Curb Terror'

Baroness Pola Manzila Uddin, a member of the British House of Lords, told ABC News recently that she is convinced that many Muslim women can, and should, help prevent terrorist attacks, because women are every family's early warning radar.

"We do have a fantastic array of (Muslim) women out there who are not known to the government. But they are not able to break through because there are a handful of (Muslim) men out there who have dominated the political agenda and dominated the media," she told ABC News.

Baroness Uddin who was born a Muslim in Bangladesh, grew up in the London borough of Newham, worked extensively on women's and human rights issues, and was elevated to the peerage by Prime Minister Tony Blair in 1998, becoming the first Muslim woman to enter the House of Lords.

She said that the government needs to sometimes go over the heads of the Muslim men who dominated her community, socially and politically, and appoint more women to key national and local government posts.

She wants more women serving as role models, in order to head off increasing recruitment of young Muslims by extremist plotters.

- By Mike Lee

Saudi women join reform call

A number of women in Saudi Arabia have signed a petition calling for radical reform to tackle growing extremist Islamic influence in the country.

The document, signed by more than 300 people including 51 women, was handed in to Crown Prince Abdullah. Called "In Defence of the Nation", it highlights the absence of popular participation in decision-making.

Critics say this lack makes the kingdom a breeding ground for extremists.

The BBC's Middle East analyst, Roger Hardy, says it is unprecedented for such a petition to be signed by women, putting new pressure on the religious conservatives, the ulama, and the ruling princes.

The key question is whether Prince Abdullah can please the liberals without alienating the powerful ulama.

The document condemned acts of violence and urged the Crown Prince to recognise the need to start implementing radical comprehensive reform process.

"Expectations are high," said Fowziyah Abu-Khalid, a sociologist and writer and one of the women who signed the petition.

Saudis are not allowed to hold public gatherings to discuss political or social issues, and press freedoms are limited.

Women are segregated in public places, cannot drive cars and must be covered from head to toe when in public.

Abu-Khalid, one of the female signatories, said: "We want change to come from within, and from our own culture.

"And we both, men and women are ready to shoulder the responsibility."

- AP

America's first Muslimah judge

Zakia Mahasa, the first Muslimah ever to be appointed to a judgeship in the American courts, is an African-American Muslim convert and a judge in a juvenile court in Baltimore. Zakia says her conversion to Islam was actually "a rebirth" because all human beings are supposed to submit to the will of God.

A powerful presence in the courtroom and a dynamic woman who knows her own mind, Zakia has possessed this drive to achieve a strong sense of direction since her earliest years.

"You really have to have a certainty and surety and confidence about yourself," as a Muslimah, Zakia advises. "It carries me through everything I do. My way of life (as a Muslimah) is superior to anything out there. I believe God wanted me in this position."

Zakia's study of Islam began while she was an undergraduate at the University of Maryland, where she was majoring in business management. She declared her shahadah (profession of faith) a year later.

Zakia's father had pragmatic concerns over his daughter's conversion to Islam. Since Zakia was headed toward law school at that time, he wondered whether there would be any place for a Muslimah in the circles of American law. Zakia herself was not at all worried.

"When I first became Muslim, from the very beginning I was covered," she says. "At work I knew it was important to look professional. I dress well. I wear suits, skirts, dresses, blazers. They're longer, looser. I don't wear over-garments to work, but it's evident I'm being modest. My hair is always covered, but pulled back and out of the way. I did my research and I am convinced that I am properly covered; you can dress many ways and still be properly covered."

Zakia excels at what she does. As Master Chancery in the family division of the Baltimore City Circuit Court, she presides over domestic cases, hearing anywhere from nine to thirty of them a day. These cases tend to be emotional and complicated, involving abused, neglected and delinquent children. Zakia unabashedly brings a healthy Islamic outlook to her work, believing that often the best way to propagate Islam is by example.

Courtesy: Azizah magazine

Female drivers return to Afghan roads

Women have got back behind the wheel in Afghanistan after a 10-year ban. Thirty women received driving licences, the first to qualify since the collapse of the hardline Taliban regime last year.

The women, mostly staff from the ministry of women's affairs, completed a four-month course of driving lessons.

Under the Taliban, women were banned from driving, working and attending school.

"It is not easy for a woman to drive in a totally male-dominated society," said Shah Jahan Sarwari, one of the women who took the driving lessons.

"We must encourage other women to take firm steps in order to achieve their rights and turn Afghanistan into an equal society for men and women."

The driving lessons were sponsored by Medica Mondiale, a German NGO which paid two Traffic Authority Afghan men to hold the classes, and also provided classroom materials.

There are more women in the process of learning to get their licences.

We salute their endeavour to be independent!

Norway invites Iran women soccer team

The Iranian Women's National Soccer Team has been invited to play two friendly matches against the Norwegian national squad. "The Norwegian Football Federation has invited Iran to hold a camp in the country and play two friendlies against their women 's national team," Fars news agency quoted Farideh Shojaei, the head of the Iranian Women's Committee, as saying.

The Norwegian federation has reportedly agreed to finance the trip and camping charges.

Nearly three years after the formation of their team, the Iranian women managed to capture the second place in the West Asian Football Federation Women's Championship in both 2005 and 2007.

Courtesy: Iranian.ws

THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

(Founded by Bohra Reformists)

Banking You Can Bank Upon

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans

We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch	Dhan Mandi Branch	Bada Bazar Branch
Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch	Madhuvan Branch	Hiran Magri Branch	Krsihi Mandi Branch
Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Ph: 02942423542 M: 9460402651	Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	M: 946030453

Rajsamand Branch	Salumber Branch	Fateh Nagar Branch
Ph: 95 2952 224022 M: 9460415822	Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Ph: 95 2955 220316 M: 9929996972

दीनी कलाम और दीनी तालीम

I. कुरान पाक

माहे रमजान, कुरान और रोज़े

आयत 185 सूर बकरः पारा 2

शहरो रमज़ानल्लज़ी उन्ज़िल फीहिल कुरान व लअ़ल्लकुम तुशकुरून

तर्जुमा :

(वह थोड़े दिन) माहे रमजान है जिसमें कुरान मजीद भेजा गया है (1) जिसका एक वस्फ यह है कि लोगों के लिए (ज़रियाए) हिदायत है और दूसरा वस्फ वाजेह दलालत है मिन जुमला इन कुतुब के जो कि (ज़रियाए) हिदायत (भी) है और (हक और बातिल में) फैसला करने वाली (भी) है सो जो शख़्स इस माह में मौजूद हो उसको ज़रूर इस (माह) में रोज़ा रखना चाहिये और जो शख़्स बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे अय्याम का (इतना ही) शुमार (करके इनमें रोज़ा) रखना (इस पर वाजिब है) अल्लाह तआला को तुम्हारे साथ (एहकाम में) आसानी करना मन्जूर है और तुम्हारे साथ (2) दुश्वारी मन्जूर नहीं और ताकि तुम लोग (अय्याम अदा या कज़ा की) शुमार की तकमील कर लिया करो (कि सवाब में कमी न रहे) लिहाज़ा तुम लोग अल्लाह तआला की बुजुर्गी (व सना) बयान किया करो इस पर कि तुमको (एक ऐसा तरीका) बतला दिया (3)

नोटः तर्जुमे में ब्रेकेट्स ''( )'' में लिखे गए अल्फाज़ कुरान की इबारत में मौजूद नहीं है। वे मफहूम को पूरा करने के लिए लिखे गये है। पढ़ते वक्त इन अलफाज को सिलसिले वार पढ़ा जाना चाहिए ताकि मफ़हुम पूरा हो जाय – इदारा।

हाशियात (मार्जिनल नोट्स)

कुरान मजीद में दूसरी आयत में आया है कि हमने कुरान मजीद श़बे कद्र में नाज़िल फरमाया और यहाँ रमज़ान शरीफ में नाज़िल फरमाया। सो यह साबित हो गया कि वह शबे कद्र रमज़ान की थी इसलिए दोनों मज़मून मुवाफिक हो गये। और अगर यह वसवसा हो कि कुरान मजीद तो कई सालो में (23 साल) थोड़ा–थोड़ा करके हुजुर सरवरे काइनात (स.अ.व.स.) पर नाजिल हुवा है फिर रमज़ान या शबे कद्र में नाज़िल फरमाने के क्या माइना ?

इसका जवाब यह है कि कुरान मजीद 'लोह महफूज' (आसमानी तख़्ती) से दुनिया के आसमान पर दफअतन (एक ही बार में) रमज़ान की शबे कद्र में नाज़िल हो चुका था फिर आसमान से दुनिया में बतद्रेज कई साल में नाज़िल हुवा। पर इसमें भी तआरूज़ न रहा।

2. एहकाम व क़वानीन (नियम) मुकर्रर करने में।

3. जिससे तुम बरकात (बरकत की ज़माअ) और समराते (नेकी के फल – परिणाम) रमज़ान से महरूम न रहो।

माखुजः कुरान मजीद तरजुमा व तफसीर इख्तसार शुदा बयानुल कुरान – (मौलाना अशरफ अली थानवी)

टिप्पणीः कुरान शरीफ में माहे रमज़ान की अजमत, इसमें नजुले कुरान, कुरान क्या है, इसका संक्षिप्त मगर मुकम्मिल खुलासा, पूरे माह के रोजे फर्ज़ करना और अहकामें इलाही में लचीलेपन को दर्शाती हुई यह एक जामेअ आयत है। साथ ही इसमें मौलाना साहब ने हाशियों में मुख़्तसर तशरीह करके किसी भी वसवसे (क्वनइज) या पेचीदगी से पाठक को मुतमइन कर लिया है। अल्लाह तआला माहे रमज़ान की बरकत से हमें नवाज़े। आमीन!

II. अहादीस

1. रोज़े (माह रमज़ान के) जहन्नुम से बचाने वाली ढ़ाल है।

2. रोज़ा आधा सब्र है।

3. हर एक चीज़ पर ज़कात वाजिब है और जिस्म (शरीर) की ज़कात रोज़ा है।

4. रोज़दार (उपवासी) की दुआ रद्द नहीं होती।

माखुजः मजम–अल–बहरेन – शेख अहमद अली

III. नहजुल बलाग़ह

(तहता कलामिल ख़ालिक व फौका़ कलामिल मख़लूक – ईश्वर वाणी (कुरान) से नीची और मनुष्य वाणी से उच्च स्थान वाली पुस्तक है नहजुल बलाग़ह)

खुतबाः नमाज, ज़कात और अमानत के बारे में मौलाए कायनात (अ.स.) अपने असहाब को यह नसीहत फरमाया करते थे।

अंश – नमाज व जक़ात

नमाज़ की पाबन्दी और उस की निगहदाश्त (संरक्षण) करो, और उसे ज़्यादा से ज़्यादा बजा लाओ, और उस के जरिए से अल्लाह का तक़र्रुब (निकटता) चाहो, क्यों कि नमाज़ मुसलमानों पर वक्त की पाबन्दी के साथ वाजिब की गई है। क्या कुरान में दोज़ख़ियों के जवाब को तुम ने नहीं सुना कि जब उन से पूछा जायेगा कि, ''कौनसी चीज़ तुम को दोज़ख की तरफ़ खींच लाई है ?'' तो वह कहेंगे, कि हम नमाज़ी न थे। बिला शुब्हा नमाज़ गुनाहों को झाड़ कर इस तरह अलग कर देती है। जिस तरह दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं, और उन्हें इस तरह अलग करती है जिस तरह चौपाओं की गर्दनों से फंदे खोल कर उन्हें रिहा किया जाता है। रसूल (स0अ0व) ने नमाज़ को उस गर्म चश्मे से तशबीह (उपमा) दी है जो किसी शख़्स के घर के दरवाज़े पर हो और वह उस में दिन रात पांच मर्तबा गुस्ल करे। तो क्या उम्मीद की जा सकती है कि उस के जिस्म पर कोई मैल रह जायेगा? नमाज़ का हक़ तो वही मर्दाने बाखुःदा पहचानते हैं जिन्हें मताए दुनिया (सांसारिकता) की सजधज और माल व औलाद का सुरूरे दीदओ दिल उस से ग़फ़लत में नहीं डालता।

चुनांचे अल्लाह सुब्हानहू का इर्शाद है कि, ''कुछ लोग ऐसे हैं कि जिन्हें खुदा के ज़िक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से न तिजारत ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीद व फ़रोख़्त (क्रय विक्रय), और रसूल (स0अ0व) बावजूदे कि उन्हें जन्नत की बशारत दी जा चुकी थी बकसरत नमाज़ पढ़ने से अपने को ज़हमत व तअब (कष्ट एवं कठिनाई) में डालते थे।

चूंकि उन्हें अल्लाह का इर्शाद था कि, ''अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और खुद भी उस की पाबन्दी करो। चुनांचे हज़रत अपने घर वालों का खुसूसीयत के साथ नमाज़ की ताकीद भी फ़रमाते थे और खुद भी उस की कसरत व बजा आवरी में ज़हमत व मशक़त बर्दाश्त करते थे।

फिर मुसलमानों के लिये नमाज़ के साथ ज़कातें भी तक़रूबे इलाही का ज़रीया क़रार दिया गया है। तो जो शख़्स उसे ब रज़ा व रग़बत अदा करेगा उस के लिए यह गुनाहों का कफ़्फ़ारा और दोजख़ से आड़ और बचाव है। देखो! अदा करने के बाद कोई शख़्स उस का ख़याल तक दिल में न लाए न उस पर ज़्यादा हाय वाय मचाए क्यों कि जो शख़्स दिली लगन के बग़ैर ज़कात दे उस से बेहतर चीज़ के लिये चश्म बराह रहता है, वह सुन्नत से बे ख़बर अज्र के एतबार से नुक़सान उठाने वाला, ग़लतकार और दाइमी परेशानी व निदामत में गिरफ्तार है।

नोटः अमानत के लिए आपकी (अ.स.) की नसीहत अगले माह के जर्नल में पढ़िये।

– माखुजः नहजुल बलाग़ह प्रकाशक तब्लीगे इमानी मुम्बई संस्करण 1996

अरबी जुबान की क्लासे शुरू

स्टुडेंट वेलफेयर सोसायटी आप सभी हज़रात को माहे रमजान की मुबारक बाद पेश करते हुए दुआ की तलबगार है। सोसायटी 1, सितम्बर से बाद नमाजे इशा वजीह पुरा की मस्जिद में (रात 8.00 से 8.30 बजे) अरबी जुबान सीखाने व इस्माइली अकायद की रोशनी में दीनी तालीम की क्लासें शुरू की गयी है। ख्वाहिश मंद हजरात से दरख्वास्त हैं वजीह पुरा मस्जिद में बाद नमाजे इशा शिरकत फरमायें।

Letter to the Editor:

सलाम अलैकूम
बहुत खुशी हुई आपके ''आल वर्ल्ड बोहरा जर्नल'' के नये रूप देख कर। मैं आपको बधाई देता हूं और इसकी कोमयाबी की दुआ करता हूं। इस शुभ समाचार पत्र में क्रमशः हमारे तमाम इमामों की जानकारी और जीवनी जितनी उपलब्ध हो सके प्रकाशित की जावे और पश्चात् तमाम दाई की। जिससे अवाम न केवल हमारी तारीख से बल्कि उनके जीवन के मूल्यों से अवगत होगी और शिक्षा ग्रहण करेगी और कृपया, असगर अली इन्जीनियर सा. के लेख को हिन्दी में छापा करें, ताकि सभी तक उनकी बात पहुंच सके।

जोएब अली
फतहनगर

Dear Editor,
Recently, I sent Rs100 as my humble contribution to express solidarity with the Bohra Journal which has its inaugural issue in a new avtaar. I wish that this paper is read all over the whole world and prove that the name is appropriately given.

Please convey my wishes to the Editorial Board and staff of the Journal and to Naib Sahab who has been the pioneer of this journal.

Name withheld on request

Dr Asghar Ali attends workshops in Shimla, Islamabad

Dr Asghar Ali Engineer was recently invited by Henry Stimpton Foundation to attend a two-day workshop on "Islam and Politics in Islamic countries" held in Islamabad in collaboration with Pakistan Institute of Policy studies. Participants included diplomats, top level bureaucrats, scholars and professors from countries like Nigeria, Egypt, Indonesia, Bangladesh, Malaysia, India and Pakistan.

Professor Kurshid Ahmed, chairman, Pakistan Institute of Policy Studies, was also present during the deliberations. The Henry Stimpton Foundation was represented by Amit Pandya who is a coordinator of the project on Islam and politics.

Dr Asghar Ali also recently attended a one-day workshop held for professors and teachers in Shimla where he was the main speaker. The workshop was attended by professors who teach Indian politics, Philosophy, Sociology and literature.

During the workshop, Dr Engineer spoke on Islam in India, tracing its advent to the contemporary situation, and Sufism in the country.

मुंबई के ख़्वातीन का कोठार के ख़िलाफ मोर्चा।

दस्तूर के मुताबिक मस्जिदों में जहां जगह मिल जाय वहाँ नमाज़ अदा की जाये। मगर कोठार के वतीरे के मुताबिक रमज़ान में नमाज़ियों के लिये हर साल की तरह इस साल मुंबई में नमाज़ियों की जगह रू 552/– फी मुसल्लाह बेची गयी। जिससे पहली ही रात को बवाल मच गया।

इस साल मुंबई की हुसैनी मस्जिद में आग दहकी। एक खातून मस्जिद में जगह पाने के सिलसिले में वहां मौजूद तंजीम के कारकुन से उलझ पड़ी। इस बीच उसके हाथ से बच्चा छूट कर गिर गया ओर बात हाथापाई तक पहुंच गयी।

बात यहां तक बढ़ी की हुसैनी मस्जिद के आमिल के बेटे बीच बचाव के लिये आए, जिन्हें भी मुंह की खानी पड़ी। एसा देख आमिल सहाब भी मैदान में कूद पड़े। बात आग की तरह फैलती हुई आस–पास के आम मुस्लमानों तक पंहुची, जिन्होंने मस्जिदों में नमाजियों के लिये खरीद फरोख्त होने वाली जगह का कड़ा विरोध किया और पुलिस को सूचित किया। साथ ही मिडिया भी वहां पहुंची। परन्तु उन्हें लोगों की आपसी लड़ाई बताकर मामले को ठण्ड़ा करने की कोशिश की।

तब तक बात आस–पास की बोहरा मस्जिद (सैफी और कुतबी मस्जिद) तक पहुंची जहां लोग इक्ट्ठा होकर मस्जिदों में नमाज़ के लिये बेची जाने जगह का विरोध करने लगे। फिर आखिरकार कोठार को आमिल का रातों–रात तबादला करना पड़ा।

(मुम्बई संवददाता)

Suffering after death

Firozbhai Bandookwala of Pune died recently in hospital and Amil Abdeali refused his burial. His son declared that since Firoz Bandookwala failed to pay wajebat he was kafir and therefore, they should burn his body.

Firoz bhai's wife had died some time ago and his two sons are living in the US. So since Firozbhai was living in Pune alone and had been unwell since the past one year, he could not go to the Amil and pay his wajebat.

Firozbhai was ultimately buried in Sunni Muslim graveyard after social worker Yasin Khan took up the task of doing so.

- Bohra Chronicle

बोहरा यूथ का स्थापना दिवस

हज़रत इमाम हुसैन का जन्म दिवस बोहरा यूथ के स्थापना दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर बोहरा यूथ संस्थान की कार्यकारणी के सदस्यों की आम सभा में सुधारवादी आंदोलन को और मुखर करने और प्रेरक ढंग से चलाने का संकल्प किया गया।

बोहरा यूथ कार्यालय में सदस्यों ने अपने विचार रखें।

इस दौरान आगामी चुनाव करवाने, दाऊदी बोहरा अकादमी कायम करने, जिसमें इसमाइली तफसीर की पुस्तकें आदि होगी जिससे समाज की बौद्धिक जाग्रति और विकास करना ही इसका प्रमुख उद्देश्य होगा, भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने, समाज के वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं का निराकरण करने और उनके कल्याण आदि के प्रस्ताव रखे गये।

Medieval Studies student awarded Fulbright scholarship

Ali Asgar Alibhai, earned a master's degree in medieval studies from SMU recently and received a prestigious Fulbright U.S. Student scholarship to study art and architectural history in Morocco in 2009. He also has been admitted with full funding to Harvard University's PhD. program in Near Eastern Languages and Civilizations for the fall.
In Morocco, Alibhai intends to study religious lamps and the evolution of lighting in medieval Islamic societies. In particular, he hopes to examine and catalog the few surviving church bells captured by Muslims during the Middle Ages and transformed into lamps for mosques, where they still hang.

Alibhai, who lives in DeSoto, Texas, says little research exists about these bells, which have Latin and Arabic inscriptions and are encased by rings of candles or, in modern times, electric bulbs.

Editorial Board: Editor: Razia Sanwari, Editorial Assistant : Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji
Advisory Board: Abid Adeeb, Mansoor Ali Bohra, Hussain Udaipuri, Yaqub Ali Zaheer, Mansoor Ali Nathdwarawala & Yusuf Ali R.G.
Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Phone: 91-0294-2521719, Fax: 91-0294-2524886
E-mail: bohra.journal@hotmail.com
Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg Udaipur - 313001

रजि:RAJH/9396 पोस्ट रजि- नं-RJ/SR/29/12/2006-08

Disclaimer: The views published in this publication are solely the contributors' opinion. The Editor and editorial board holds no responsibilities for them.

SPACE FOR POSTAL ADDRESS